Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. 16, Issue No. 4, March-2019, ISSN 2230-7540

दौसा जिले की सिकराय तहसील में पत्थर नक्काशी उद्योग का विकास एवं प्रभाव

Samay Singh Meena[1]* Dr. Samay Singh Meena[2]

[1] Research Scholar, Geography Department, Rajasthan University, Jaipur

[2] Research Director, Lecturer, Govt. PG College, Dausa

सार – *हस्तशिल्प किसी भी देश की सांस्कृतिक पहचान को सुरक्षित रखते है| हस्तशिल्प से देश के लाखो लोगो को रोजगार मिलता है| पत्थरनक्काशी उधोग में राजस्थान का मुख्य स्थान है| प्राचीन समय से ही राजस्थान स्थापत्य के क्षेत्र में अग्रणी रहा है| राजस्थान में देलवाडा, रणकपुर जैन मंदिर हो या दौसा की आभानेरी बावड़ी हो, सभी में हस्तशिल्प कला , स्थापत्य कला का अद्भुत संगम दर्शाया हुआ है| राजस्थान में पत्थर नक्काशी के क्षेत्र में पाली, जालोर, सिरोही, अजमेर, दौसा सहित कई स्थानों पर इसकी नक्काशी का कार्य किया जाता है| दौसा जिले की सिकराय तहसील में भी पत्थर नक्कासी का काम बड़े स्तर पर किया जाता है| सिकराय तहसील में सिकंदरा पत्थर नक्कासी के क्षेत्र में प्रसिद्द है | पत्थर नक्काशी उद्धोग से आसपास के लोगो को रोजगार भी प्राप्त हो जाता है | पत्थर नक्कासी से बने मूर्तियाँ देश के कई स्थानों में सप्लाई की जाती है | प्रस्तुत अध्ययन में मैंने प्रतिचयन विधि में माध्यम से प्रमुख क्षेत्रो का चयन कर के अध्ययन किया है |*

सन्दर्भ : *हस्तशिल्प कला, राजस्थान में पत्थर नक्काशी उद्योग, दौसा जिले की सिकराय तहसील में पत्थर नक्काशी उद्योग|*

----------X----------

परिचय

सिकराय तहसील राजस्थान के दौसा जिले में अवस्थित है | यह जयपुर से 55 किलोमीटर और दिल्ली से 250 किलोमीटर दूर जयपुर-आगरा राष्ट्रीय राजमार्ग पर स्थित है | इसे देव नगरी भी कहते है | सिकराय तहसील पत्थर नक्कासी के लिए प्रसिद्द है | सिकराय तहसील का सिकंदरा बलुआ पत्थर पर नक्कासी के लिए घरेलु व अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रसिद्ध है | दौसा जिले में महेंदीपुर बालाजी, आभानेरी बावड़ी प्रसिद्ध स्थान है जहाँ पर कई फिल्मो की शूटिंग हुई है | आभानेरी बावड़ी गुप्तकालीन बावड़ी है जो कलात्मक दृष्टि का उत्कृष्ट नमूना है । यह बावड़ी बांदीकुई से 33 किमी दूर स्थित है | दौसा जिले के भांडारेज में खुदाई में मिली दीवारो, मूर्तियाँ, सजावटी जालीदार व टेराकोटा के बर्तनों के लिए प्रसिद्ध है | प्राचीन काल से हस्तशिल्प एवं स्थापत्य के क्षेत्र में इस क्षेत्र का नाम रहा है |

सिकराय तहसील की मानचित्र में स्थिति

www.ignited.in

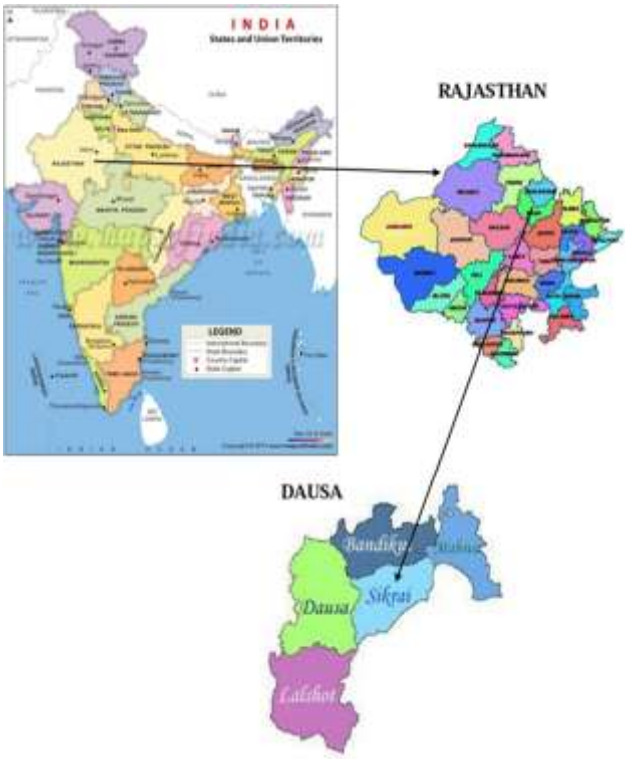

अध्ययन के उद्देश्य

1. सिकराय तहसील में वितरित पत्थर नक्कासी उधोग के बारे में जानकारी प्राप्त करना |
2. पत्थर नक्कासी उद्योग का आधारभूत ढांचा एवं प्रयुक्त विधियों की जानकारी प्राप्त करना |
3. पत्थर निकास उधोगके विकास की संभावनाओ का विश्लेष्ण करना |
4. पत्थर नक्कासी से पर्यावरण पर प्रभाव का अध्ययन करना |
5. पत्थर नक्कासी उधोग से जुड़े लोगो की जीवन प्रत्याशा पर पड़ने वाले प्रभाव का मूल्याङ्कन करना |

शोध प्रविधि

दौसा जिले की सिकराय तहसील में पत्थर नक्कासी उद्धोग के अध्ययन के लिए मैंने प्रतिचयन विधि का उपयोग किया| जिसके अंतर्गत मैंने सिकराय तहसील के सिकंदरा, मेहंदीपुर बालाजी, मानपुर, गीजगड, कड़ी की कोठी , भांडारेज का चयन किया गया एवं मैंने प्रतुत अध्ययन को संपन्न के लिए प्रत्यक्ष अवलोकन किया गया| द्वितीयक आकड़ो के लिए विभिन्न किताबो, पत्र पत्रिकाओ का अध्ययन किया|

सिकराय तहसील के हस्तशिल्प उद्योग के प्रमुख क्षेत्र

दौसा जिले की सिकराय तहसील अपने आप में कला, संस्कृति, शिल्प, का विविधतापूर्ण वैभव समेटे हुए हैं | यह वैभव यहाँ के मेलो, एतिहासिक स्थलों, हस्तशिल्पो में बखूबी परिलक्षित होता है | सिकराय तहसील में सिकंदरा , मेहंदीपुर बालाजी , गीजगड , मानपुर , कड़ी की कोठी, भांडारेज क्षेत्र में पत्थर पर कलात्मक नक्काशी देखी जाती है | इन क्षेत्रो में कलात्मक चिराई , तरह तरह की जालिया , मकानों के चौखट , कुण्डी, गमले, मेहराब, मंदिर छतरी , खम्बे , गीत , लैम्प, शेर , हठी , हरीन, ऊंट , मोर, तोता, मछली , मंदिरों में भागन एवं देवियों की मूर्तियाँ , मानवकद मूर्तियाँ अदि बनाए जाते है |

सिकराय तहसील में प्रमुख हस्तशिल्प

पत्थर नक्काशी को लेकर अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर सिकराय तहसील का सिकंदरा की पत्थर नक्काशी स्थान बना चुकी है | **इंडिया स्टोन मार्ट** जिसमे देश विदेश की कलाकारी का प्रदर्शन होता है उनमे सिकंदरा कई बार प्रथम स्थान पर रहा है | सिकराय तहसील का भांडारेज खुदाई में मिली दीवारों,

www.ignited.in

मूर्तियाँ , सजावटी जालीदार पत्थर , टेराकोटा के बर्तनों के लिए प्रसिद्ध है |

पत्थर नक्कासी उधोग के पर्यावरण एवं मानव पर दुष्प्रभाव

पत्थर नक्काशी उद्योग से निकले अवशिष्ट एवं धुलकणों से पर्यावरण पर दुष्प्रभाव पड़ता है | आसपास का वातावरण दूषित हो जाता है | आसपास के खेतो में पत्थरों की कणों के वायु के साथ उड़ उड़ कर जमा होने से उनका उपजाऊपन समाप्त होता जाता है | छोटी छोटी वनस्पतियाँ पैदा होने से पहले की ख़त्म होने लगती है | साथ की सिकराय तहसील के पत्थर नक्काशी उधोग वाले क्षेत्र के लोगो की जीवनरेखा छोटी होती जा रही है | पत्थरो के धुल के कणों से उन्हें सिलिकोसिस बीमारी का सामना करना पड़ रहा है | आसपास के क्षेत्र के लोगो एवं मजदूरो में श्वास एवं फेफड़ो सम्बन्धी बीमारियों ने घर कर लिया है जो अत्यंत हानिकारण है |

निष्कर्ष एवं सुझाव

हस्तशिल्प हमारी संस्कृति का हिस्सा रहा है | दौसा जिले में सिकराय तहसील पत्थर नक्कासी का प्रमुख केंद्र रहा है | क्षेत्र में कारीगरों एवं मजदूरो को प्रशिक्षित किया जाये साथ ही काम के वक्त मास्क लगाकर एवं उपकरणों के माध्यम से साफ़ सफाई रखते हुए हस्तशिल्प का कार्य किया जाए ताकि सिलिकोसिस जैसी हानिकारक बीमारी से बचा जा सके | राज्य सरकार को पत्थर नक्कासी करने वाले मजदूरो को सिलिकोसिस बीमारी से बचाने के लिए प्रयास किये जाने चाहिए | साथ ही सिकंदरा जो की दौसा जिले का प्रमुख पत्थर नक्काशी केंद्र है , इसी की तरह अन्य केन्द्रों को भी विकसित किया जाये ताकि अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर दौसा जिले को एक नई पहचान मिल सके |

स्रोत

1. शर्मा, राकेश निशीथ: हस्तशिल्प कला और उधम का अनूठा संगम, उद्धोग व्यापार पत्रिका, नवम्बर 2011
2. ठाकुर, एन डी.: हस्तशिल्प वस्तुओ का निर्यात, ग्रामीण रोजगार संवर्धन
3. यादव चंद्रभान: राजस्थान में हस्तशिल्प
4. राजस्थान का भूगोल- हरिमोहन सक्सेना
5. इंडिया स्टोन मार्ट, 2016
6. पत्रिकाए – योजना, कुरुक्षेत्र
7. दैनिक पत्रिकाए – दैनिक भास्कर, राजस्थान पत्रिका |

Corresponding Author

Samay Singh Meena*

Research Scholar, Geography Department, Rajasthan University, Jaipur